www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

6622
वर्गांक

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

# अध्यात्म विज्ञान की ब्रह्मवर्चस् शोध प्रक्रिया

—ब्रह्मवर्चस्

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# अध्यात्म विज्ञान की ब्रह्मवर्चस् शोध प्रक्रिया

भगवान ने मनुष्य को अपनी ही अनुकृति बनाया है। चेतना की दृष्टि से उसके अन्तराल में उन सभी विभूतियों के शक्तिबीज विद्यमान हैं। जिनसे सृष्टा स्वयं सम्पन्न हैं। इस प्रकार ब्रह्माण्ड में जो प्राकृतिक शक्तियाँ संव्याप्त हैं उन सब का भी सार संक्षेप मानवी काया में भर दिया गया है। ब्रह्माण्ड का छोटा रूप ही पिण्ड है। सौर मण्डल की गति-विधियाँ परमाणु में पूरी तरह विद्यमान देखी जा सकती हैं। परमात्मा के दिव्य वैभव का हस्तान्तरण आत्मा में किया गया है। इन्हीं कारणों से मनुष्य को ईश्वर का युवराज कहा गया है। वेदान्त दर्शन में आत्मा और परमात्मा की एकता का भली प्रकार प्रतिपादन हुआ है।

आश्चर्य इस बात का है कि इसकी एकता होते हुए भी इतनी भिन्नता क्यों है। विभूतिवान भगवान का सर्वोपरि स्वजन इतना दीन दरिद्र क्यों है। इसका कारण तत्वदर्शियों ने यह बताया है कि अनुदान बीज रूप में मिले हैं और वे सभी अन्तराल की मर्म स्थल तिजोरी में बंद करके रखे गये हैं। उन्हें उपलब्ध करने के लिए जिस चाबी की आवश्यकता है वह पराक्रम द्वारा प्राप्त की जाती है। आध्यात्मिक पराक्रम को साधना कहते हैं। पात्रता और प्रामाणिकता इसी के आधार पर उपलब्ध होती है। यही है वह प्रतियोगिता जिसकी परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर मनुष्य का वर्चस्व निखरता है। "साधना से सिद्धि" का सिद्धान्त सर्व-विदित है। साधना का तत्व दर्शन वैज्ञानिक अविष्कारों जैसा है। प्रकृति की अनेक शक्तियों को मनुष्य ने सूझ-बूझ और घोर प्रयत्न रत रह कर हस्तगत किया है। भाप, बिजली, रेडियो, अणु आदि की प्राकृतिक शक्तियाँ वैज्ञानिक पुरुषार्थ के आधार पर ही हस्तगत हुई हैं।

मानवी काया एक सर्व सम्पदाओं से भरी पूरी रत्न खदान है। उसे ठीक तरह कुरेदा जा सके तो पुरातन काल के त्रिकाल दर्शी और

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सर्व समर्थ ऋषियों की तरह अनेकानेक ऋद्धि सिद्धियों को हस्तगत कर सकना संभव हो सकता है। अन्तराल की प्रसुप्त क्षमताओं का जागरण प्रयास ही साधना है।

मानवी सत्ता को एक सर्वाङ्गपूर्ण प्रयोगशाला माना जा सकता है। उसके शरीर में प्रकृति की सभी शक्तियां बीज रूप में विद्यमान हैं। उसकी चेतना में परब्रह्म की विराट् चेतना का सार तत्व पूरी तरह समाहित है। इन्हें उपलब्ध करने के लिए वैसे ही प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है जैसी कि बीज को वृष्टि कर्म द्वारा अंकुरित पल्लवित एवं फलित किया जाता है। परमाणु में प्रचंड शक्ति होते हुए भी उसका प्रत्यक्षी करण वैज्ञानिक विधि से ही हो सकता है। शुक्राणु को समर्थ मनुष्य बनाने के लिए गर्भ धारण की प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। इसी उपक्रम को साधना से सिद्धि का सिद्धान्त कहा जा सकता है। विद्वान, पहलवान, धनवान बनाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। आत्म सत्ता में समाहित विभूतियों को भी जागृत करने और उनके चमत्कार देखने के लिए भी आत्म साधना के क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ता है। आत्म साधना को उच्चस्तरीय पुरुषार्थ माना गया है।

साधना का अपना विज्ञान है। अन्तराल की भावना, मान्यता, आकांक्षा और विचारणा को परिष्कृत करने के लिए तत्व दर्शन का आश्रय लेना होता है। ज्ञान योग इसी को कहते हैं। चिन्तन, मनन, ध्यान धारणा का उपक्रम इसीलिए है। स्वाध्याय सत्संग द्वारा इस क्षेत्र में आगे बढ़ा जाता है। संक्षेप में यही तत्व दर्शन या ज्ञान योग है। उसमें चिन्तन का ही प्रधान रूप से उपयोग होता है।

साधना का दूसरा पक्ष है क्रिया योग इसमें शारीरिक हलचलों की भी आवश्यकता पड़ती है। आसन, प्राणायाम, बंध मुद्रा, व्रत, उपवास, तीर्थ-यात्रा, जप, हवन आदि वस्तुओं के सहारे एवं शारीरिक, मानसिक श्रम के सहारे बन पड़ने वाले उपचार क्रिया योग कहलाते हैं। ध्यान योग और क्रियायोग के सम्मिश्रण से ठोस मग्र साधना विज्ञान की पृष्ठभूमि बनती है।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


कोई समय था जब आज के भौतिक विज्ञान की तरह पुरातन काल में अध्यात्म विज्ञान का प्रचलन था। शरीर की प्रयोगशाला में प्रकृति की शक्तियों का उत्पादन कर लिया जाता था। इस आधार पर हस्तगत हुई उपलब्धियों को सिद्धियां कहते थे। चेतना को, अन्तःकरण को, परिष्कृत करने की मानसिक एवं भावनात्मक विभूतियों को ऋद्धियाँ कहा जाता है। आत्म साधना से पुरातन काल में साधकों को सिद्धियां भी प्राप्त होती थीं और ऋद्धियाँ भी। आज के वैज्ञानिकों और बुद्धिवादियों की तुलना में पुरातन काल के आत्मसाधना रत प्रयोक्ता कहीं अधिक बढ़े चढ़े लाभ प्राप्त करते थे। शरीर की प्रयोगशाला में न अतिरिक्त ईंधन की जरूरत पड़ती है, न कल पुर्जे खरीदने और टूट फूट सुधारने की। यह अत्यधिक बहुमूल्य और विलक्षण होते हुए भी सर्व साधारण के लिए सुलभ है। उसे ईश्वर प्रदत्त उपहार के रूप में अनायास ही सुयोग सौभाग्य की तरह मिला है।

साधना को परम पुरुषार्थ माना गया है। उस माध्यम से वह सब कुछ मिल सकता है। जो मनुष्य के लिए आवश्यक है। जब साधना युग था तब वह विज्ञान भी सर्व विदित और लोक प्रिय था। उत्साह भी था और प्रचलन भी। पर आज तो हर व्यक्ति ललक, लिप्सा का गुलाम बनता जाता है। बहिर्मुखी दृष्टि आनन्द और वैभव बाहर खोजती है। अन्तर्मुखी होकर किसी को अन्तराल के रत्न भंडार खोजने की फुरसत नहीं। विलासी, लालची और व्यामोह ग्रस्त मनुष्य को संयम साधना के सहारे बन पड़ने वाले अध्यात्म पुरुषार्थ को अपनाने और ऋषि कल्प महानता अर्जित करने में अभिरुचि नहीं। ऐसी दशा में जन साधारण की जहाँ उपेक्षा बढ़ी वहां एक अनर्थ असमंजस यह भी खड़ा हुआ कि उस विज्ञान के निष्णात अभ्यस्तों की संख्या भी घटती गई। खरीददारों के न रहने पर व्यवसाय भी समाप्त हो गया। इन दिनों योग साधना के नाम पर मायाचार का ही बोल बाला है। सस्ते प्रयोग से लम्बे चौड़े सब्ज बाग दिखाने वाले, ललचाते, फुसलाते तो बहुत हैं पर मंजिल तक

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


पहुँचाने वाले निष्णातों का एक प्रकार से समापन ही होता जा रहा है। उस महान विज्ञान के स्थान पर अब बिडम्बना ही जहाँ-तहाँ मदारी जैसे कौतुक कोतूहल खड़े करती दीखती है। साधना एक प्रकार से मखौल बनती जा रही है। साथ ही उस पर से विश्वास भी घट रहा है।

आवश्यक समझा गया है कि अध्यात्म विज्ञान के पुरातन स्वरूप का फिर से ऐसा अनुसंधान किया जाय जिससे उसकी यथार्थता वस्तु स्थिति एवं विधि-व्यवस्था ठीक प्रकार समझी जा सके। अविश्वास को विश्वास में बदलने का यही तरीका है। भौतिक विज्ञान की तुलना अनेक गुने महत्वपूर्ण अध्यात्म विज्ञान का समापन ऐसी बुरी तरह नहीं होना चाहिए जैसे कि इन दिनों हो रहा है। समस्या के समाधान के लिए ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान की स्थापना हुई है, इसके अन्तर्गत मानवी काया की उच्चस्तरीय प्रयोग शाला में बन पड़ने वाले उन प्रयोगों का अनुसंधान किया जा रहा है जिसके आधार पर व्यक्तित्व में दैवी विभूतियों का पुरातन काल जैसा अवतरण सम्भव हो सके। इसके लिए आवश्यक था कि जो कहा जाय उसे प्रत्यक्षवादिता के इस युग में प्रमाणित कर दिखाया जाय।

चेतना क्षेत्र की अध्यात्म विद्या को महाप्रज्ञा—गायत्री कहते हैं। प्रकृति क्षेत्र को प्रभावित करने वाली विद्या को अग्नि होत्र कहते हैं। इन दोनों का युग्म है। दोनों परस्पर अन्योन्याश्रित भी हैं। चेतनात्मक उभारों को परिपक्व करने के लिए अग्निहोत्र की आवश्यकता पड़ती है। ईंट को आग में पकाने की तरह। शब्द को लाउडस्पीकर द्वारा बढ़ाने की की तरह। आग और पानी के संयोग से भाप बनती है और उसके प्रयोग से रेल चलती है। रेडियो प्रसारणों में भाषण के साथ बिजली की शक्ति भी जुड़ती है। ठीक उसी प्रकार साधना विज्ञान में मनुष्य की भाव चेतना एवम् शब्द शक्ति के समन्वय से विनिर्मित होने वाली गायत्री को अग्नि-होत्र की दिव्य ऊर्जा द्वारा प्रचंड किया जाता है। गायत्री को भाव योग और अग्नि होत्र को क्रिया योग का प्रतीक माना गया है गायत्री और यज्ञ

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


भारतीय संस्कृति के माता-पिता माने गये हैं। साधना विज्ञान में उन्हें प्राण और शरीर की उपमा दी गई है। शरीर और मन का, चरित्र और व्यवहार का संयम परिष्कार तो प्रथम सोपान है ही। इसके उपरान्त हीं साधना क्षेत्र में प्रवेश मिलता है।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान द्वारा साधना से सिद्धि से सम्बन्धित हर क्षेत्र पर प्रयोग परीक्षण चल रहे हैं। गायत्री की शब्द शक्ति किस प्रकार साधारण शब्दोच्चार न रह कर चेतना क्षेत्र में प्रचण्ड हलचल उत्पन्न करती है। व्यक्तित्व को निखारती, प्रभाव क्षेत्र को उभारती और वातावरण में उत्कृष्टता भरने के पीछे किन तथ्यों का समावेश है इसकी खोज शोध संस्थान द्वारा गंभीरता पूर्वक की जा रही है। शब्द शक्ति एक प्रचंड ऊर्जा है। प्राणियों से प्राणियों के बीच आदान-प्रदान उसी के सहारे चलते हैं। ज्ञान-विज्ञान का उद्‌भव उसी के सहारे संभव हुआ है। यंत्र मानवों का निर्देशन इसी आधार पर हो रहा है। प्रचार प्रयोजनों में उसी की प्रमुखता है। ऐसी दशा में यह भी विश्वास किया जाना चाहिए कि मंत्र शक्ति के उपयोग से आत्मोत्कर्ष, दूसरों का हित साधन एवम् वातावरण में अभीष्ट परिवर्तन भी इस आधार पर सम्भव है।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान का एक महत्वपूर्ण अनुसंधान विषय मंत्र विद्या के रहस्यों का उद्‌घाटन है। इसके लिए गायत्री महा मन्त्र को आधार माना गया है। शब्द शक्ति के आध्यात्मिक प्रभावों की सम्भावना प्रयोगशाला में तद् विषयक बहुमूल्य यंत्रों द्वारा खोजी जा रही है। साथ ही कल्प साधना सत्रों में सम्मिलित होने वाले साधकों द्वारा किए गए जप अनुष्ठान के प्रतिफल का लेखा-जोखा लिया जाता है। इस आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचने की संभावना बढ़ रही है कि यन्त्र-शक्ति की तुलना में मन्त्र शक्ति का प्रभाव किसी भी प्रकार कम नहीं होना चाहिए।

अग्नि होत्र मात्र चूल्हे में जलने वाली आग नहीं है वरन् प्राण ऊर्जा के समन्वय से उत्पन्न हुई दिव्याग्नि का विशेष प्रयोग है। इसमें न केवल दिव्य वनस्पतियों का सूक्ष्मीकरण एवं बहुली करण होता है वरन्

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


प्रयोक्ताओं की मन्त्र शक्ति एवं परिष्कृत प्राण उर्जा का भी समन्वय रहता है अस्तु उसकी प्रभाव क्षमता भी असाधारण होनी चाहिए। शास्त्रकारों ने यज्ञ से शारीरिक स्वास्थ का सुधार मनोबल का परिष्कार एवम् आत्म चेतना में देवत्व के अभिवर्धन जैसे लाभ बताये हैं उसे उपचार एवम् उत्कर्ष के अमोध साधन माना है। साथ ही यह भी कहा है कि उससे वातावरण में संव्याप्त प्रदूषण का शमन होता है। यह बहुचर्चित विषय है कि यज्ञ से पर्जन्य वर्षा होती है। पर्जन्य का अर्थ मेघ वर्षा ही नहीं वरन् यह भी है कि अन्तरिक्ष में प्राणवान तत्व धरती पर उतरे और वनस्पतियों में जीवनी शक्ति बढ़ाकर प्राणियों मनुष्यों को अधिकाधिक समर्थ बनाये।

यह सभी लाभ ऐसे हैं जिनका यदि सही प्रयोग जाना जा सके और इन उपलब्धियों को काम में लाया जा सके तो मानवी समस्या के समाधान में, उज्ज्वल भविष्य की संरचना में भारी योगदान मिल सकता है। अस्तु ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के तत्वावधान में शांतिकुञ्ज के प्रयोग क्षेत्र मे सम्मिलित रूप से वे प्रयत्न चल रहे हैं जिनसे साधना विज्ञान के हर क्षेत्र पर प्रकाश पड़ सके। इस क्षेत्र में हुई प्रगति को भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों की तुलना में किसी भी प्रकार कम महत्वपूर्ण नहीं समझा जाना चाहिए। गायत्री और अग्नि होत्र के अतिरिक्त अन्यान्य साधनायें भी कल्प साधना सत्रों के माध्यम से अपनाई जा रही हैं और उनके परिणामो को गम्भीरता पूर्वक जांच पड़ताल की जा रही है। ब्रह्मवर्चस् के उच्चस्तरीय परीक्षणों में साधकों के आरम्भिक और अन्तिम स्थिति ही नहीं जानी जाती वरन् बीच-बीच में आते रहने वाले उतार चढ़ावों पर भी पैनी दृष्टि रखी जाती है ताकि आत्म विज्ञान का महत्वपूर्ण आधार, साधना उपचार का सिद्धांत एवम् स्वरूप समझने में सहायता मिले। इस प्रत्यक्षवादिता के युग में यह चिन्तन आवश्यक था कि अध्यात्म विज्ञान को भौतिक विज्ञान जैसा ही खरा और प्रभावी सिद्ध कर दिखाया जाय। ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के अन्तर्गत यही हो रहा है।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



रहस्यवाद का एक अति महत्वपूर्ण पक्ष अन्तर्ग्रही अनुदानों के धरती पर अवतरण की सही स्थिति को समझा जाय और अनिष्टों से बचने तथा अनुदान से लाभ लेने के लिए सतर्क, सन्नद्ध रहा जाय। इस हेतु शान्तिकुञ्ज में अन्तर्ग्रही परिस्थितियों को अवगत कराने वाली वेध-शाला का भी निर्माण किया गया है। उस आधार पर दृश्य गणित को आधार मानकर अभिनव पंचाङ्ग प्रकाशित करने का काम हाथ में लिया गया है। इसमें पुराने नवग्रह ही नहीं, नए खोजे गये नेपच्यून, यूरेनस और प्लूटों ग्रहों का भी गणित किया गया है। हर स्थान का अलग पंचांग बनाने और जो जहाँ जन्मा है वहाँ के हिसाब से जन्मकुण्डली बनाने का विधान भी इस पंचाङ्ग में है इस प्रयास से अन्तर्ग्रही परिस्थितियों के साथ अपनी धरती के वातावरण तथा प्राणि समुदाय पर पहुँचने वाले प्रभाव को अधिक अच्छी तरह समझा जा सकेगा। उस जानकारी के आधार पर परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने की महत्वपूर्ण सुविधा भी हस्तगत होगी। इसे ज्योतिष के नाम पर प्रचलित अन्धविश्वासों के स्थान पर अभिनव यथार्थवादी स्थापना कहा जा सकता है। इसे ज्योतिर्विज्ञान का काया कल्प कहा जाय तो भी अत्युक्ति न होगी।

अध्यात्म विज्ञान की, साधना प्रयोग की वस्तुस्थिति समझने अपनाने की दृष्टि से ब्रह्मवर्चस् शोध का असाधारण महत्व है। समय ही बतायेगा कि इस शुभारम्भ ने मनुष्य जाति की कितनी महान सेवा साधना का उत्तरदायित्व उठाया और उसे पूरा कर दिखाया है। ●

प्रका० मुद्रक:— युगान्तर चेतना प्रेस, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य :— ४० पैसा

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org